पक्षधर

राष्ट्रवाद
और
गोरा

पक्षधर 27

संस्थापक संपादक : दूधनाथ सिंह : 1975

पक्षधर

प्रतिरोध की संस्कृति का रचनात्मक हस्तक्षेप

वर्ष : 13 अंक : 27 जुलाई-दिसम्बर, 2019

संपादक
विनोद तिवारी

संपादन सहयोग
अजय आनंद
सूरज त्रिपाठी

पक्षधर पुस्तिका-3
राष्ट्रवाद और गोरा

अक्षर संयोजन

कम्प्यूटेक सिस्टम

ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

आवरण चित्र : अँधेरे में आकृति : रवींद्रनाथ टैगोर

मूल्य

एक प्रति : ₹ 100

सदस्यता

वार्षिक : ₹ 250

संस्थाओं के लिए : ₹ 300 (डाक खर्च सहित)

पंचवार्षिक : ₹ 1000

आजीवन : ₹ 5000

विदेश के लिए : 100 $

संपादन/प्रकाशन : अवैतनिक/अव्यावसायिक

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक विनोद तिवारी, सी-4/604, ऑलिव काउण्टी, सेक्टर-5, वसुंधरा, गाजियाबाद-201012 के लिए बी.के. ऑफसेट, एफ-93, पंचशील गार्डेन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 से प्रकाशित और मुद्रित।

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादक और लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित सामग्री के किसी भी तरह के उपयोग की अनुमति नहीं होगी।

सम्पर्क

सी-4/604, ऑलिव काउण्टी, सेक्टर-5

वसुंधरा, गाजियाबाद-201012

फ़ोन : 0120-4572303

मो. 09560236569

ई-मेल : pakshdharwarta@gmail.com

वेब पता : www.pakshdhar.com

PAKSHDHAR

A Bi-Annual Literary Magazine

Editor : Vinod Tiwari

Language : Hindi

ISSN : 2231-1173

अनुक्रम

संपादकीय

आमार संगे कथा बोलबे बोले 5

आलेख

बांग्ला उपन्यास धारा और गोरा : कुछ साम्प्रतिक प्रसंग / **रामशंकर द्विवेदी** 7

गोरा व तत्कालीन समाज / **श्रीनारायण पाण्डेय** 24

रवींद्रनाथ लिखित 'गोरा' और भारतीय देशभक्ति की असाध्य समस्या / **तनिका सरकार** (अनु. : धर्मराज कुमार) 32

गोरा : अस्मिता का आख्यान और आख्यान की अस्मिता / **मदन सोनी** 52

'गोरा' में खचित जटिल समय / **गोपाल प्रधान** 67

अनुवाद की सांस्कृतिक राजनीति / **अबु सालेह** (अनु. रामकीर्ति शुक्ल) 71

गोरा : संवादधर्मी आधुनिकता का उदय / **वैभव सिंह** 79

नवजागरण की यात्रा में रवींद्रनाथ टैगोर का 'गोरा' / **अमरेन्द्र कुमार शर्मा** 91

गोरा—भारतीयता की खोज : एक अंतर्यात्रा / **विनोद तिवारी** 103

आमार संगे कथा बोलबे बोले

रवींद्रनाथ टैगोर अपने युग के एक विलक्षण प्रतिभा संपन्न साहित्यकार, कलाकार, दार्शनिक और चिंतक थे। उनका जीवन-कर्म विश्व-मानवता की बेहतरी के लिए किए गए उनके प्रयासों के कारण पहचाना जाता है। उनका सम्पूर्ण लेखन, चिंतन और सार्वजनिक जीवन इस बात की गवाही देते हैं कि मनुष्यता को बचाए रखना सबसे मूल्यवान और नैतिक कार्य है। चंडीदास के 'सबारि ऊपर मानुष सत्य' में गुरुदेव की अगाध आस्था थी और इस आस्था व विश्वास से वे कभी भी डिगे नहीं। वे मानवता के पक्ष में सदैव खड़े रहे। उन्होंने कभी भी गुलामी, उपनिवेशवाद, अंधराष्ट्रीयतावाद, साम्राज्यवाद, फासीवाद, युद्ध, कट्टरता और हमलावर नीतियों का समर्थन नहीं किया। इनके विरूद्ध न केवल नैतिक विरोध बल्कि संघर्ष और प्रतिरोध के लिए खुलकर सामने भी आए। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जब अबीसीनिया, स्पेन, चीन और चेकोस्ल्वाकिया में, जिस तरह से फासिस्टवादी ताकतों के हमले हो रहे थे उसके विरोध में दुनिया भर के लेखकों, बुद्धिजीवियों और संस्कृतिकर्मियों ने, जिनमें से कई नोबल पुरस्कार से सम्मानित लोग भी थे, अपना विरोध जताया। रवींद्रनाथ टैगोर ने उस 'लीग अगेन्स्ट फासिज्म एंड वार' की भारतीय शाखा की अध्यक्षता करते हुए फासीवाद के विरुद्ध आम जनता को एकजुट होने का आह्वान किया। हम जानते हैं ब्रिटिश हुकूमत द्वारा जलियाँवालाबाग नरसंहार के खिलाफ़ उन्होंने 'नाईटहुड' का तमगा लौटा दिया था। आज जिस तरह का कट्टरवाद और सैन्यवाद बढ़ा है, आक्रामक राजनीति और धार्मिक उन्माद का वातावरण तैयार किया गया है, उससे पूरी दुनिया में फासीवाद का खतरा एक बार फिर से मंडराने लगा है। ऐसे नाजुक वक़्त में रवींद्रनाथ टैगोर जैसे मनीषियों के सोच-विचार और लेखन को पुनः पढ़े जाने की जरूरत है। आधुनिक भारतीय लेखकों, साहित्यकारों और चिंतकों में रवींद्रनाथ टैगोर की जो वैश्विक व्याप्ति और स्वीकृति है वह शायद किसी की नहीं। टैगोर का अपने समय के प्रायः सभी लेखकों, बुद्धिजीवियों, वैज्ञानिकों, दर्शनिकों से संवाद था। हेनरी बर्गसाँ, जार्ज़ बर्नार्ड शॉ, थामस मान, राबर्ट फ्रॉस्ट, एच. जी. वेल्स, अल्बर्ट आइन्स्टीन, रोम्या रोलां जैसे लोगों से उन्होंने मुलाक़ात की थी, उनसे मानवता के हित के संबंध में बातचीत की थी। आधुनिक विश्व की साहित्यिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक बिरादरी में गांधी, टैगोर और प्रेमचंद ये तीन ही ऐसे नाम हैं जिन्हें वैश्विक मानवता के विकास और भलाई में अमन और शान्ति के नजीर के तौर पर पेश किया जाता है।

रवींद्रनाथ टैगोर ने साहित्य और कला की प्रायः हर विधा में लेखन और सृजन का कार्य किया है। उनका लेखन और सृजन प्रचुर है। उन्होंने, कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, डायरी, पत्र, यात्रा-वृतांत, आलोचना, निबंध सब पर लिखा है। चित्रकला और संगीत में भी उनका सृजन महत्वपूर्ण है। ऐसे कृति व्यक्ति के रचनात्मक लेखन से उनके एक उपन्यास 'गोरा' को 'पक्षधर'